१. इतिहास लेखन : पश्चिमी परंपरा

१.१ इतिहास लेखन की परंपरा
१.२ आधुनिक इतिहास लेखन
१.३ यूरोप में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास और इतिहास लेखन
१.४ महत्त्वपूर्ण विचारक

भूतकाल में घटित घटनाओं के बीच क्रमिक संगति बिठाकर उनका आकलन करना; इस उद्देश्य को लेकर इतिहास का अनुसंधान, लेखन और अध्ययन किया जाता है । यह निरंतर और अखंड रूप में चलने वाली प्रक्रिया है ।

वैज्ञानिक ज्ञानशाखाओं में उपलब्ध ज्ञान की सत्यता की पड़ताल करने हेतु प्रायोगिक पद्धति एवं प्रत्यक्ष निरीक्षण का अवलंब किया जाता है । इस पद्धति के आधार पर विभिन्न घटनाओं के संदर्भों में सार्वकालिक और सार्वत्रिक नियमों को स्थापित करना और उन नियमों को पुनः-पुनः सिद्ध करना संभव होता है ।

इतिहास के अनुसंधान अथवा शोधकार्य में प्रायोगिक पद्धति और प्रत्यक्ष निरीक्षण का अवलंब करना संभव नहीं होता है क्योंकि इतिहास की घटनाएँ घटित हो चुकी होती हैं । अतः उन घटनाओं का निरीक्षण करने के लिए हम वहाँ उपस्थित नहीं होते हैं और उन घटनाओं को दोहराया भी नहीं जा सकता। साथ ही, सार्वकालिक और सार्वत्रिक नियम स्थापित करना तथा उन नियमों को सिद्ध करना संभव नहीं होता है ।

सब से पहले ऐतिहासिक दस्तावेज लिखने के लिए जिस भाषा और लिपि का प्रयोग किया गया होगा; उस दस्तावेज का वाचन करने और उसका अर्थ समझने के लिए उस भाषा और लिपि को पढ़ सकने वाले विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है । इसके पश्चात अक्षर की बनावट अर्थात आकार-प्रकार, लेखक की भाषा शैली, उपयोग में लाये गए कागज का निर्माण समय और कागज का प्रकार, अधिकारदर्शक मुद्रा जैसी विभिन्न बातों के विशेषज्ञ संबंधित दस्तावेज मौलिक हैं अथवा नहीं; इसे निश्चित करने हेतु सहायता कर सकते हैं। इसके पश्चात इतिहासतज्ञ

इतिहास अनुसंधान की पद्धति

ऐतिहासिक संदर्भों का तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर दस्तावेज में उपलब्ध जानकारी की विश्वसनीयता की पड़ताल कर सकते हैं ।

इतिहास के अनुसंधान कार्य में सहायता प्रदान करने वाली विभिन्न ज्ञानशाखाएँ और संस्थान हैं । जैसेः पुरातत्त्व अभिलेखागार, हस्तलेखों अथवा पांडुलिपियों का अध्ययन, पुराभिलेख, अक्षरआकार विज्ञान, भाषारचना विज्ञान, मुद्राविज्ञान, वंशावली का अध्ययन आदि ।

१.१ इतिहास लेखन की परंपरा

इतिहास में उपलब्ध प्रमाणों का अध्ययनपूर्वक अनुसंधान कर भूतकाल में घटित घटनाओं की प्रस्तुति अथवा संरचना किस प्रकार की जाती है; यह हमने देखा । इतिहास की इस प्रकार प्रस्तुति अथवा संरचना करने की लेखन पद्धति को इतिहास लेखन कहते हैं तथा इतिहास की इस प्रकार अध्ययनपूर्ण प्रस्तुति अथवा संरचना करने वाले अनुसंधानकर्ता को इतिहासकार कहते हैं ।

इतिहास की प्रस्तुति अथवा संरचना करते समय इतिहासकार के लिए भूतकाल में घटित प्रत्येक घटना का उल्लेख करना और उसका बोध कराना संभव नहीं होता है । इतिहास लेखन करते समय इतिहासकार किन घटनाओं का चुनाव करता है; यह इस बात पर निर्भर करता है कि इतिहासकार पाठकों तक क्या ले जाना चाहता है। चुनी हुईं घटनाएँ और उनको प्रस्तुत करते समय इतिहासकार द्‌वारा अवलंबित वैचारिक दृष्टिकोण उसकी लेखन शैली को निर्धारित करता है ।

विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में इस प्रकार इतिहास लिखने की परंपरा नहीं थी । इसका अर्थ हम यह नहीं कह सकते कि उन लोगों को भूतकाल का बोध अथवा उनमें जिज्ञासा नहीं थी । अपने बड़े-बुजुर्ग लोगों द्‌वारा सुनी हुईं हमारे पूर्वजों के जीवन और वीरता-पराक्रम की बातें अगली पीढ़ी तक पहुँचाने की आवश्यकता उस समय भी अनुभव होती थी। गुफाओं में बनाए गए चित्रों द्‌वारा स्मृतियों का संरक्षण करना, कहानी कहना, गीतों-शौर्यगीतों का गायन करना जैसी परंपराएँ विश्व की संस्कृतियों में अति प्राचीन समय से विद्‌यमान थीं। आधुनिक इतिहास लेखन में उन परंपराओं का उपयोग साधनों के रूप में किया जाता है ।

क्या, आप जानते हैं ?

फ्रांस के लुव्र संग्रहालय का सब से अतिप्राचीन शिलालेख

ऊपर के चित्र में हाथ में ढाल और भाला लिये हुए सैनिकों की अनुशासित पंक्ति और उनका नेतृत्व करते सेनानी दिखाई देते हैं ।

ऐतिहासिक घटनाओं का लिखित अंकन करने की परंपरा का प्रारंभ मेसोपोटोमिया की सुमेर संस्कृति में हुआ; ऐसा वर्तमान स्थिति में कहा जा सकता है । सुमेर साम्राज्य के राजाओं और उनके बीच हुए संघर्षों की कहानियों का वर्णन तत्कालीन शिलालेखों में संरक्षित रखा गया है । उनमें सब से अतिप्राचीन शिलालेख लगभग ४५०० वर्ष प्राचीन है । शिलालेख में सुमेर के तत्कालीन दो राजाओं के बीच हुए युद्‌ध का अंकन हुआ है । इस समय यह शिलालेख फ्रांस के विश्वविख्यात लुव्र संग्रहालय में रखा गया है ।

१.२ आधुनिक इतिहास लेखन

आधुनिक इतिहास लेखन पद्‌धति की चार प्रमुख विशेषताएँ बताई जाती हैं :

(१) यह पद्‌धति वैज्ञानिक पद्‌धति है । इसका प्रारंभ उचित प्रश्नों की प्रस्तुति के साथ होता है ।

(२) ये प्रश्न मानव केंद्रित होते हैं अर्थात ये प्रश्न भूतकालीन विभिन्न मानवी समाज के सदस्यों द्‌वारा विशिष्ट कालावधि में किए गए कार्य व्यापारों

से संबंधित होते हैं । इतिहास में उन कार्य व्यापारों का संबंध दैवी घटनाओं अथवा देवी-देवताओं की कथा-कहानियों के साथ जोड़ने का प्रयास किया नहीं जाता ।

(३) उन प्रश्नों के इतिहास में दिए गए उत्तरों को विश्वसनीय प्रमाणों का आधार प्राप्त रहता है । अतः इतिहास की प्रस्तुति अथवा संरचना तर्कपूर्ण और सुसंगति बैठने वाली होती है ।

(४) भूतकाल में मानव समाज द्‌वारा किए गए कार्य व्यापारों के आधार पर इतिहास में मानव समाज की प्रगति का अनुमान किया जाता है ।

उपर्युक्त विशेषताओं से युक्त आधुनिक इतिहास लेखन की परंपरा के बीज प्राचीन ग्रीक अर्थात यूनानी इतिहासकारों के लेखन में पाए जाते हैं; ऐसा माना जाता है । 'हिस्ट्री' शब्द ग्रीक भाषा का है। ईसा पूर्व ५ वीं शताब्दी में हिरोडोटस नामक ग्रीक इतिहासकार था । ग्रीक इतिहासकार हिरोडोटस ने 'हिस्ट्री' शब्द का सब से पहले प्रयोग अपने 'द हिस्ट्रीज' ग्रंथ के शीर्षक में किया ।

१.३ यूरोप में हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास और इतिहास लेखन

अठारहवीं शताब्दी तक यूरोप में दर्शन और विज्ञान क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई । वैज्ञानिक पद्‌धति का उपयोग करते हुए सामाजिक और ऐतिहासिक यथार्थों का भी अध्ययन करना संभव है; यह विश्वास विचारकों को होने लगा था। आगामी समय में यूरोप-अमेरिका में इतिहास और इतिहास का लेखन जैसे विषयों पर बहुत विचार मंथन हुआ । फलस्वरूप इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता को महत्त्व प्राप्त होता गया ।

अठारहवीं शताब्दी से पूर्व यूरोप के विश्वविद्‌यालयों में सर्वत्र ईश्वर संबंधी विचार-विमर्श करना और उस संबंध में दर्शन जैसे विषयों को ही अधिक महत्त्व दिया गया था परंतु इस स्थिति में धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा । १७३७ ई. में जर्मनी के गोटिंगैन विश्वविद्‌यालय की स्थापना हुई । इस विश्वविद्‌यालय में पहली बार इतिहास विषय को स्वतंत्र स्थान प्राप्त हुआ । इसके पश्चात जर्मनी के अन्य विश्वविद्‌यालय भी इतिहास के अध्ययन केंद्र बने ।

१.४ महत्त्वपूर्ण विचारक :

इतिहास लेखन के विज्ञान का विकास होने में अनेक विचारकों का योगदान प्राप्त हुआ । उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण विचारकों की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

रेने देकार्त (१५९६-१६५० ई.) : इतिहास का लेखन करने के लिए उपयोग में लाये जाने वाले ऐतिहासिक साधनों की विशेषतः कागजातों की विश्वसनीयता की जाँच करना आवश्यक है; यह विचार आग्रहपूर्वक रखा जा रहा था । यह विचार रखने वालों में फ्रांसिसी दार्शनिक रेने देकार्त अग्रणी था । उसके द्‌वारा लिखित 'डिस्कोर्स ऑन द मेथड' ग्रंथ में वैज्ञानिक अनुसंधान की दृष्टि से एक नियम बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है और वह नियम यह है कि 'जब तक कोई बात सत्य है; ऐसा निःसंदेह रूप से स्थापित नहीं होता है; तब तक उसे कदापि स्वीकार नहीं करना चाहिए ।

रेने देकार्त

वोलटेयिर (१६९४-१७७८ ई.) : वोलटेयिर का वास्तविक नाम फ्रांस्वा मरी अरुए था । फ्रांसिसी दार्शनिक वोलटेयिर ने इतिहास के लेखन हेतु यह विचार प्रस्तुत किया कि मात्र वस्तुनिष्ठ सत्य और घटनाओं के कालक्रम तक ध्यान केंद्रित न करते हुए तत्कालीन समाज में प्रचलित परंपराएँ, व्यापार, आर्थिक व्यवस्था, कृषि आदि घटकों का विचार करना भी आवश्यक है । परिणामस्वरूप इतिहास को प्रस्तुत करते समय अथवा उसकी रचना करते समय मानवी जीवन का सर्वांगीण

वोलटेयिर

विचार किया जाना चाहिए; इस विचार को महत्त्व प्राप्त हुआ । इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि वोलटेयिर आधुनिक इतिहास लेखन का जनक था ।

जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल (१७७०–१८३१ ई.) : इस जर्मन दार्शनिक ने इस बात पर बल दिया कि ऐतिहासिक यथार्थ अथवा वास्तविकता को तर्कशुद्धता पद्धति द्वारा प्रस्तुत किया जाना चाहिए । इतिहास का घटनाक्रम प्रगति के चरणों को दर्शाता है । उसने यह प्रतिपादित किया कि इतिहास की प्रस्तुति अथवा संरचना में इतिहासकार को समय-समय पर उपलब्ध होने वाले प्रमाणों के अनुसार बदलते जाना स्वाभाविक है । उसके इस विवेचन के परिणामस्वरूप अनेक दार्शनिकों को यह विश्वास हुआ कि यद्यपि इतिहास की अध्ययन पद्धति विज्ञान की पद्धतियों की तुलना में भिन्न है; फिर भी उसकी गुणवत्ता कम नहीं है । हेगेल के व्याख्यानों और लेखों का संकलन 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसोफिकल साइंसेस' नामक ग्रंथ में प्राप्त है । हेगेल द्वारा लिखित 'रिजन इन हिस्ट्री' पुस्तक चर्चित है ।

जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल

समझ लें

हेगेल के मतानुसार किसी भी घटना का अर्थ स्थापित करने के लिए उसका वर्गीकरण दो विरोधी वर्गों में करना पड़ता है अन्यथा मानव मन को उस घटना का आकलन नहीं होता है । जैसेः सच-झूठ, अच्छा-बुरा । इस पद्धति को द्वंद्ववाद (डाइलेक्टिक्स) कहते हैं । इस पद्धति में पहले एक सिद्धांत स्थापित किया जाता है । इसके बाद उस सिद्धांत को काटने वाला प्रतिसिद्धांत स्थापित किया जाता है । अब उन दोनों सिद्धांतों का तार्किक खंडन-मंडन किया जाता है । इसके पश्चात दोनों सिद्धांतों का सार जिसमें समाविष्ट है; उस सिद्धांत की समन्वयात्मक रचना की जाती है।

लियोपॉल्ड वॉन रांके (१७९५–१८८६ ई.) : उन्नीसवीं शताब्दी में किए जा रहे इतिहास लेखन की पद्धति पर प्रमुखतः बर्लिन विश्वविद्यालय के लियोपॉल्ड वॉन रांके के विचारों का प्रभाव दिखाई देता है । उसने बताया कि इतिहास विषय के अनुसंधान में विश्लेषणात्मक पद्धति किस प्रकार की होनी चाहिए । मूल दस्तावेजों के आधार पर प्राप्त जानकारी सब से अधिक महत्त्वपूर्ण होती है; इस बात पर उसने बल दिया। साथ ही उसने यह भी स्पष्ट किया कि ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित सभी प्रकार के कागजातों एवं दस्तावेजों की कसकर खोज करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है । इस पद्धति द्वारा ऐतिहासिक सत्य तक पहुँचना संभव होता है; यह विश्वास उसने व्यक्त किया । उसने इतिहास के लेखन में काल्पनिकता के उपयोग किए जाने की कड़ी आलोचना की । उसने विश्व के इतिहास की प्रस्तुति अथवा संरचना पर बल दिया। उसके विविध लेखों का संकलन 'द थियरी एंड प्रैक्टीस ऑफ हिस्ट्री' और 'द सीक्रेट ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' ग्रंथों में प्राप्त है ।

लियोपॉल्ड वॉन रांके

कार्ल मार्क्स (१८१८–१८८३ ई.) : उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कार्ल मार्क्स द्वारा स्थापित सिद्धांतों के परिणामस्वरूप इतिहास की ओर देखने के दृष्टिकोण में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाने वाली

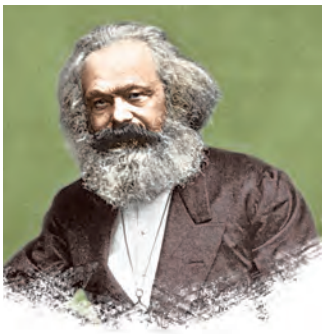
कार्ल मार्क्स

वैचारिक प्रणाली अस्तित्व में आई । इतिहास अमूर्त कल्पनाओं का नहीं होता है अपितु वह जीवित मनुष्यों का होता है । मनुष्य-मनुष्य के बीच के रिश्ते-नाते उनकी मौलिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाले उपलब्ध संसाधनों के स्वरूप और स्वामित्व पर निर्भर करते हैं । ये संसाधन समाज के विभिन्न वर्गों को समान मात्रा में प्राप्त नहीं होते हैं । फलस्वरूप समाज का वर्ग पर आधारित विषम विभाजन होता है और वर्ग संघर्ष निर्माण होता है। मानव का इतिहास ऐसे ही वर्ग संघर्ष का इतिहास है तथा जिस वर्ग के नियंत्रण में उत्पादन के संसाधन होते हैं; वह वर्ग अन्य वर्गों का आर्थिक शोषण करता है, यह विचार उसने प्रस्तुत किया । उसका लिखा ग्रंथ 'दास कैपिटल' विश्वविख्यात है ।

एनल्स प्रणाली : बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में फ्रांस में एनल्स नाम से जानी जानेवाली इतिहास लेखन की प्रणाली का उदय हुआ । एनल्स प्रणाली के स्वरूप इतिहास लेखन को एक भिन्न दिशा प्राप्त हुई । इतिहास का अध्ययन मात्र राजनीतिक गतिविधियों, राजाओं, महान नेताओं और उनके आनुषंगिक रूप में राजनीति, कूटनीति और युद्धों पर केंद्रित न करते हुए तत्कालीन जलवायु, स्थानीय जन, किसान, व्यापार, प्रौद्योगिकी, यातायात-संचार, संपर्क साधनों, सामाजिक विभाजन और समूह की मानसिकता जैसे विषयों का अध्ययन करना भी महत्त्वपूर्ण माना जाने लगा । एनल्स प्रणाली का प्रारंभ करने और उसे विकसित करने का श्रेय फ्रांसिसी इतिहासकारों को दिया जाता है ।

स्त्रीवादी इतिहास लेखन : स्त्रीवादी इतिहास लेखन से तात्पर्य स्त्रियों के दृष्टिकोण से की गई इतिहास की पुनर्रचना । फ्रांसिसी विदुषी सीमाँ-द-बोवा ने स्त्रीवाद की मौलिक भूमिका स्पष्ट की । स्त्रीवादी इतिहास लेखन में स्त्रियों को स्थान देने के साथ-साथ इतिहास लेखन के क्षेत्र में पुरुषप्रधान दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने पर बल दिया गया । इसके पश्चात स्त्रियों के जीवन से जुड़े नौकरी, रोजगार, ट्रेड यूनियन, उनके लिए कार्यरत संस्थान, स्त्रियों का पारिवारिक जीवन जैसे विभिन्न पहलुओं पर विस्तार में विचार करने वाला अनुसंधान प्रारंभ हुआ । १९९० ई. के पश्चात दिखाई देता है कि स्त्री को एक स्वतंत्र सामाजिक वर्ग मानकर इतिहास लिखे जाने पर बल दिया गया है ।

माईकेल फूको

माईकेल फूको (१९२६-१९८४ ई.): बीसवीं शताब्दी के फ्रांसिसी इतिहासकार माईकेल फूको के लेखन द्वारा एक नई अवधारणा का उदय हुआ । उसने अपने 'आर्कओलॉजी ऑफ नॉलेज' ग्रंथ में यह प्रतिपादित किया कि इतिहास की कालक्रमानुसार अखंड रूप में प्रस्तुति अथवा रचना करने की पद्धति अनुचित है । पुरातत्व में अंतिम सत्य तक पहुँचना उद्देश्य नहीं होता है अपितु भूतकाल में हुए परिवर्तनों का स्पष्टीकरण करने का प्रयास होता है; इस तथ्य की ओर उसने ध्यान खींचने का प्रयास किया । फूको ने इतिहास में उल्लिखित परिवर्तनों को स्पष्ट करने पर बल दिया है । अतः उसने इस पद्धति को ज्ञान का पुरातत्व कहा है ।

इतिहासकारों ने इससे पूर्व मनोविकार, चिकित्सा विज्ञान, कारागार प्रबंधन जैसे विषयों पर विचार नहीं किया था परंतु फूको ने इन विषयों पर इतिहास की दृष्टि से विचार किया ।

इस प्रकार इतिहास लेखन की व्याप्ति निरंतर विस्तार पाती गई । साहित्य, स्थापत्य, शिल्पकला, चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला, नाट्यकला, फिल्म निर्माण, दूरदर्शन जैसे विविध विषयों के स्वतंत्र इतिहास लिखे जाने लगे ।

स्वाध्याय

१. (अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए ।

(१) .... को आधुनिक इतिहास लेखन का जनक कहा जाता है ।
(अ) वोलटेयिर (ब) रेने देकार्त
(क) लियोपॉल्ड रांके (ड) कार्ल मार्क्स

(२) 'आर्कओलॉजी ऑफ नॉलेज' ग्रंथ .... द्वारा लिखा गया है ।
(अ) कार्ल मार्क्स (ब) माइकेल फूको
(क) लूसिआँ फेबर (ड) वोलटेयिर

(ब) निम्न में से असत्य जोड़ी को पहचानकर लिखिए ।

(१) जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल – रीजन इन हिस्ट्री
(२) लियोपॉल्ड वॉन रांके – द थियरी एंड प्रैक्टीस ऑफ हिस्ट्री
(३) हिरोडोटस – द हिस्ट्रीज
(४) कार्ल मार्क्स – डिसकोर्स ऑन द मेथड

२. निम्न अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए ।

(१) द्वंद्ववाद (२) एनल्स प्रणाली

३. निम्न कथनों को कारणसहित स्पष्ट कीजिए ।

(१) स्त्रियों के जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार करने वाले अनुसंधान कार्य प्रारंभ हुए ।
(२) फूको की लेखन पद्धति को ज्ञान का पुरातत्व कहा है ।

४. निम्न संकल्पनाचित्र को पूर्ण कीजिए ।

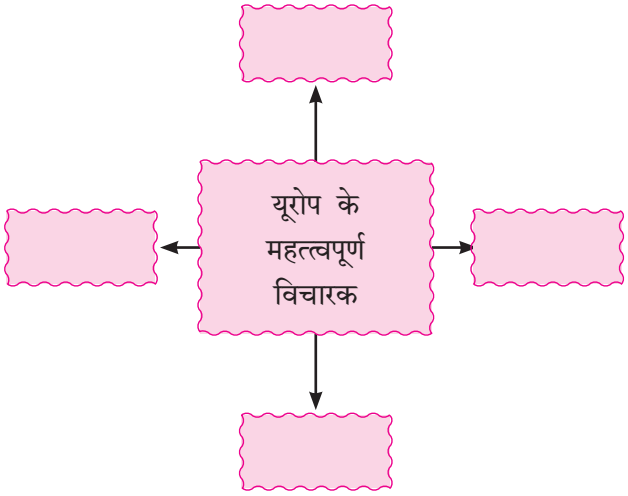

५. निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए ।

(१) कार्ल मार्क्स का द्वंद्व सिद्धांत अथवा वर्गवाद स्पष्ट कीजिए ।
(२) आधुनिक इतिहास लेखन पद्धति की कौन-सी चार विशेषताएँ हैं ?
(३) स्त्रीवादी इतिहास लेखन किसे कहते हैं ?
(४) लियोपॉल्ड वॉन रांके के इतिहास विषयक दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए ।

उपक्रम

निम्न में से आपको अच्छा लगने वाले किसी भी एक विषय पर विस्तार में जानकारी प्राप्त कीजिए; और उसका इतिहास लिखिए । उदा.,

* पेन (कलम) का इतिहास
* मुद्रणकला का इतिहास
* संगणक का इतिहास

35RC5T